SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मौसमी स्थानांतरण और गरीबी का समुद्र तटीय क्षेत्र में प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

राजेशकुमार मोहनभाई सोसा, (Ph. D.), समाजशास्त्र विभाग,
एल. आर. वलिया विनयन एवं पी.आर. मेहता वाणिज्य महाविद्यालय, भावनगर, गुजरात, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
राजेशकुमार मोहनभाई सोसा, (Ph. D.),
समाजशास्त्र विभाग,
एल. आर. वलिया विनयन एवं पी.आर. मेहता वाणिज्य महाविद्यालय, भावनगर, गुजरात, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/01/2022
Revised on : -----
Accepted on : 13/01/2022
Plagiarism : 01% on 07/01/2022

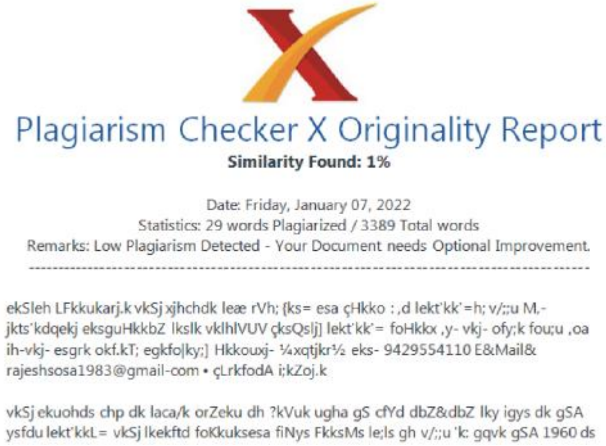
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, January 07, 2022
Statistics: 29 words Plagiarized / 3389 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.
----

ekSleh LFkkukarj.k vkSj xjhchdk leæ rVh; {ks= esa çHkko : ,d lekt'kk'=h; v/;;u M,- jkts'kdqekj eksguHkkbZ lkslk vklhlVUV çksQslj] lekt'kk'= foHkkx ,y- vkj- ofy;k fou;u ,oa ih-vkj- esgrk okf.kT; egkfo|ky;] Hkkouxj- ¼xqtjkr½ eks- 9429554110 E&Mail& rajeshsosa1983@gmail-com • çLrkfodA i;kZoj.k

vkSj ekuohds chp dk laca/k orZeku dh ?kVuk ugha gS cfYd dbZ&dbZ lky igys dk gSA ysfdu lekt'kkL= vkSj lkekftd foKkuksesa fiNys FkksMs le;ls gh v/;;u 'k: gqvk gSA 1960 ds

शोध सार

पर्यावरण और मानव के बीच का संबंध वर्तमान की घटना नहीं है बल्कि कई–कई साल पहले का है। लेकिन समाजशास्त्र और सामाजिक विज्ञानो में पिछले थोडे समय से ही अध्ययन शरू हुआ है। 1960 के बाद ओजोन परत की क्षति के कारण हम पर्यावरण के बारे में जागरूक और सतर्क हुए। गरीबी विश्व की स्थायी चुनौती रही है। 2030 तक सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के तहत विश्व को गरीबी खत्म करनी है। विश्व बैंक की रिपोर्ट "पॉवर्टी एंड शेयर्ड प्रॉस्पेरिटी 2018 : पीसिंग टुगेदर द पॉवर्टी पजल" के अनुसार, गरीबी उन्मूलन दर की रफ्तार कम हुई है। 1990–2015 के दौरान एक प्रतिशत की सालाना दर से गरीबी कम हुई थी लेकिन 2013–15 के दौरान यह एक प्रतिशत से कम हो गई। 2015 दुनियाभर के आधे से ज्यादा गरीब इन देशों में हो गए। वैश्विक स्तर पर केवल पांच देश– भारत, बांग्लादेश, नाइजीरिया, इथियोपिया और कांगा गणराज्य में दुनिया के आधे गरीब हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह कि गरीबी उन चुनिंदा देशों में स्थायी बन चुकी है, जहां विश्व के सर्वाधिक गरीब बसते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र मे पर्यावरणीय अधपतन के परिणाम स्वरूप गरीबी मे वृद्धि हुई है, यह अभ्यास किया गया है। गरीबी पर पर्यावरणीय प्रभाव किस तरह से हो रहा है? पर्यावरणीय प्रभाव के कारण जीवनशैली मे कौन से बदलाव आये है? और इस हम गरीबी की समस्या को हल करने के लिए कौन–कौन से प्रभावी उपाय कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य में अध्ययन क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति की जांच करना। जो मौसमी स्थानांतरण को अपनाते हैं उनकी सामाजिक–पारिस्थितिकी स्थिति को समझना। कार्य–परिस्थिति और स्थिति से संबंधित पहलु की जानकारी हासिल करना।

प्रस्तुत अध्ययन गुजरात भावनगर जिला बहुत

सारे गांवों और चार तहसिल को कवर कर रहा है, जिनका आधार समुद्र तटीय है। ये चार तहसील के एक–एक गाँव को पसंद कर के उन गाँवों में से २५–२५ उत्तरदाता को पसंद कर के अभ्यास इकाई में १०० उत्तरदाता को सम्मिलित किया है। इस प्रकार, मौसमी प्रवास एक पर्यावरणीय और जनसांख्यिकीय समस्या बनी हुई है। अकेले कानून इसका समाधान नहीं कर सकता। अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश अप्रवासी अशिक्षित या कम पढ़े–लिखे हैं जो किसी न किसी रूप में किसी के स्थानांतरण के लिए पर्यावरण विकर्षण का बर्बर कार्य कर रहे हैं। अब अगर हम प्रवासियों की विशेषताओं के संदर्भ में चर्चा करें, तो जो लोग प्रवास करते हैं वे मूल क्षेत्र के लोग हैं जो अधिक विविध क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है। दूसरी ओर, यह देखा गया है कि प्रवासी परिवारों में मूल स्थान और गंतव्य दोनों की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का मिश्रण होता है। मौसमी प्रवास के कुछ कार्यात्मक और कुछ विकार्यात्मक पहलू हैं। विधवाओं, परित्यक्त और निराश्रित परिवारों को भी समूह प्रवास में काम और सामाजिक सुरक्षा मिलती है जिसे इसका कार्यात्मक पहलू माना जाता है।

मुख्य शब्द

स्थानांतरण, गरीबी, समुद्र तटीय प्रदेश, सामाजिक परिवर्तन.

प्रस्तावना

पर्यावरण और मानवीके बीच का संबंध वर्तमान की घटना नहीं है बल्कि कई–कई साल पहले का है। लेकिन समाजशास्त्र और सामाजिक विज्ञानो में पिछले थोड़े समय से ही अध्ययन शुरू हुआ है। 1960 के बाद ओजोन परत की क्षति के कारण हम पर्यावरण के बारे में जागरूक और सतर्क हुए, और 1972 के बाद समाजशास्त्र में पर्यावरण के संबंध में अध्ययन शरू हुआ। उसके बाद पर्यावरण और उसके घटकों एवं विकास के संबंध में वैज्ञानिक चर्चा का दौर शुरू होता है। वैश्विक स्तर पर यही चर्चा 20वीं सदी के अंत में शुरू होती है। जैसे–जैसे वैज्ञानिक शोध आगे बढ़ती हैं, यह साबित हो गया है कि जब तक हम विकास के प्रयासों के लिए बने रहें, तब तक हम पर्यावरण के पतन का ख्याल भी रखें। पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न रूपों ने मानव जीवन और इसकी स्थिरता को अच्छी तरह से नष्ट कर दिया। तो बेहतर भविष्य के लिए पर्यावरण सामग्री समृद्धि की रक्षा और संरक्षण बेहद जरूरी हो गया है। अगर हम ये नहीं कर सकेंगे तो हम पर्यावरणीय गरीबी की और एक कदम और आगे बढ़ जाएंगे।

गरीबी विश्व की स्थायी चुनौती रही है। 2030 तक सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के तहत विश्व को गरीबी खत्म करनी है। विश्व बैंक की रिपोर्ट "पॉवर्टी एंड शेयर्ड प्रॉस्पेरिटी 2018 : पीसिंग टुगेदर द पॉवर्टी पजल" के अनुसार, गरीबी उन्मूलन दर की रफ्तार कम हुई है। 1990–2015 के दौरान एक प्रतिशत की सालाना दर से गरीबी कम हुई थी लेकिन 2013–15 के दौरान यह एक प्रतिशत से कम हो गई। 2015 दुनियाभर के आधे से ज्यादा गरीब इन देशों में हो गए। वैश्विक स्तर पर केवल पांच देश–भारत, बांग्लादेश, नाइजीरिया, इथियोपिया और कांगा गणराज्य में दुनिया के आधे गरीब हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह कि गरीबी उन चुनिंदा देशों में स्थायी बन चुकी है, जहां विश्व के सर्वाधिक गरीब बसते हैं। आर्थिक पिछड़ेपन के अन्य कारण भी हैं लेकिन पर्यावरण का क्षरण आर्थिक कल्याण के मूल में हैं। संयुक्त राष्ट्र के मिलेनियम असेसमेंट के मुताबिक, भूमि के बंजर होने के कारण एक बिलियन लोगों की जिंदगी दाव पर है।

जहां तक सौराष्ट्र क्षेत्र का सवाल है, यहाँ पर बहुत सारा तटीय इलाके (तटीय क्षेत्र) हैं। जिसका इसी इलाके के भविष्य पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है पर उसका सबसे ज्यादा प्रभाव रोजगार पर होता है। दिन–प्रतिदिन भूमि कृषि के लिए क्षारयुक्त, अनुर्वर और फलहीन होती जा रही है जिसके कारण सौराष्ट्र के तटीय क्षेत्रों में गरीबी मे बढ़ोतरी हुई है। प्रस्तुत शोध पत्र मे पर्यावरणीय अधपतन के परिणाम स्वरूप गरीबी मे वृद्धि हुई है, यह अभ्यास किया गया है। गरीबी पर पर्यावरणीय प्रभाव किस तरह से हो रहा है? पर्यावरणीय प्रभाव के कारण जीवनशैली मे कौन से बदलाव आये हे? और इस हम गरीबी की समस्या को हल करने के लिए कौन–कौन से प्रभावी उपाय कर सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैः

- ➢ अध्ययन क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति की जांच करना।
- ➢ जो मौसमी स्थानांतरण को अपनाते हैं उनकी सामाजिक–पारिस्थितिकी स्थिति को समझना ।
- ➢ **कार्यः** परिस्थिति और स्थिति से संबंधित पहलु की जानकारी हासिल करना ।
- ➢ अध्ययन क्षेत्र में गरीबी और पर्यावरणीय संसाधनों के बीच संबंध की व्याख्या करना।

प्रस्तुत अध्ययन गुजरात के सौराष्ट्र प्रदेश के समुद्र तटीय क्षेत्रों से संबंधित है। यहाँ पर विशेष रूप से प्राथमिक आकंड़ों के संग्रहण के लिए भावनगर जिले के तटीय क्षेत्र का चयन किया है। भावनगर जिला बहुत सारे गांवों और चार तहसील को कवर कर रहा है, जिनका आधार समुद्र तटीय है। ये चार तहसील के एक एक गाँव को चयन कर के उन गाँवों में से २५–२५ उत्तरदाता को चयन कर के अभ्यास इकाई में १०० उत्तरदाता को सम्मिलित किया है। वहाँ आय के स्रोत कम होते जा रहे हैं और इसलिए मुझे इस क्षेत्र का अध्ययन करने में रूची उत्पन्न हुई। वहाँ आय के स्रोत कम होते जा रहे हैं और जो स्रोत है वह ज्यादा लोगो को रोजगार नहीं दे सकते। इसलिए संशोधक की इस क्षेत्र का अध्ययन करने में दिलचस्पी रही है।

शोध कार्यप्रणाली–डेटा संग्रह तकनीक

यह शोध कार्य मे क्षेत्रीय कार्य (फील्ड वर्क) पद्धति का उपयोग किया है, जिसमें केस स्टडीज तकनीक और अवलोकन तकनीक का उपयोग किया गया है और साथ–साथ जहां आवश्यक था वहाँ पर साक्षात्कार तकनीक का भी उपयोग किया गया है। कुछ तटीय गाँव अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए हैं, इसलिए शोधकर्ता या प्रश्नकर्ता किसी अप्रत्यक्ष तकनीक का उपयोग नहीं कर सकता और ऊपर से वे अपने कमाई के स्थान बदल रहे हैं, इसलिए फील्ड वर्क आवश्यक तरीका था। प्रस्तुत अभ्यास वर्णनात्मक है।

अध्ययन क्षेत्र के समुदाय की सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय स्थिति

सौराष्ट्र प्रायद्वीप मे शत्रुंजी नदी सबसे बड़ी नदी है। शत्रुंजी नदी और बगड़ नदी जहाँ समुद्र को मिलती है उन दोनों नदी के बीच के भू –भाग मे स्थित समुदायो को इस अभ्यास के लिए चयन किया गया है। ये पूरा प्रदेश भावनगर जिले के तलाजा तहसील का है। इस प्रदेश की अपनी एक ऐतिहासिक, भौगोलिक, संस्कृतिक एवं पर्यावरणीय विरासत है। इस प्रदेश मे बहुत मात्रा मे फलिया उत्पादित होती थी, और यह इस प्रदेश के लोगो का प्रमुख आहार था। फलिया के अच्छे उत्पादन व उपयोग की वजह से इस प्रदेश का नाम 'कंथाल्य' पड़ा है। इस अभ्यास विस्तार मे समुद्र किनारे से ३ से ५ कि. मी. की सीमारेखा के अंदर दस से ज्यादा गाँव समाविष्ट होते है। जहाँ सरतानपर, खंढेरा, निचड़ी, आमला, रेलिया, गढुला, राजपरा, जांजमेर, मधुवन, मेथला गाँव को शोध मे समाविष्ट किया है।

जो लोग मौसमी स्थानांतरण करते है, उन परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति की समीक्षा शोध में की गई है। अधिकांश छोटे और बड़े या सीमांत किसान व्यवसाय के लिए दूसरे क्षेत्र में चले जाते हैं। अध्ययन के तहत चुने गए गांवों में कोली जाति की आबादी का अनुपात सबसे ज्यादा है। जिसमें प्रत्येक गांव में कोली जाति के ८५ से ९८ प्रतिशत लोग रहते हैं। इस अध्ययन के तहत जो केस स्टडी की गई है वह प्रत्येक कोली जाति से संबंधित है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 10 गांवों का चयन किया गया है। प्रत्येक गांव से 1–1 केस का चयन किया गया है। इन दस केस स्टडीज में 8 पुरुषों और 2 महिलाओं को उत्तरदाताओं के रूप में चुना गया है। 10 में से 8 उत्तरदाताओं की आयु 40 वर्ष से अधिक है। जबकि 7 सदस्य संयुक्त परिवार में रहते हैं। 10 उत्तरदाताओं में से 4 अशिक्षित हैं, 5 के पास बहुत कम शिक्षा या प्राथमिक शिक्षा है। परिवार के कमाने वाले सदस्यों की प्रति व्यक्ति मासिक आय 6000 से 8000 के बीच है।

मौसमी स्थानांतरण के लिए जिम्मेदार कारक

किसी भी घटना के पीछे जिम्मेदार कारण होते हैं। मौसमी प्रवास के कारण भी हैं जिनका वर्णन दाताओं द्वारा किया गया है। केसः 1, वर्ष ४०, पुरुष, ग्राम– राजपारा, तीन संतान– दो पुत्र, एक पुत्री, तीनों विवाहित। सबसे बड़े बेटे के दो बेटे हैं और सबसे छोटे बेटे का एक बच्चा है। उनका नौ का परिवार है। परिवार के पास 3 एकड़ जमीन है जिसमें से 2 एकड़ में मानसून में खेती की जाती है और बाकी जमीन में कुछ नहीं होता है। वे मौसमी रूप से पलायन करते हैं क्योंकि खेती के अलावा कोई वैकल्पिक साधन नहीं है। इस गाँव के लगभग ७५ प्रतिशत से ८० प्रतिशत लोग मौसमी रूप से प्रवास करते हैं।

केसः २, आयु ५४– ५५ साल, पुरुष, गाँव– रेलिया। वे करीब १३ साल से मौसमी प्रवास कर रहे हैं। उनके चार बच्चे हैं। उनके तीन बेटे और एक बेटी है, एक विवाहित हैं, अन्य तीन अविवाहित हैं। उनकी बूढ़ी मां उनके साथ रहती हैं। उसके पास १० बीघा जमीन है जिनमे से ३ बीघा जमीन समुद्र तट के पास है, जबकि शेष सात बीघा भूमि गाँव की दिशा में हैं, वे साल में दो मौसमों में खेती करते हैं। जहां सर्दी के पिछले दिनो से लेकर गर्मी के दिनों में रेलिया गांव पीने का पानी नहीं मिलता है। भू–गर्भ जल क्षारीय जल है जो पीने योग्य नहीं है। गर्मियों में उसके कुएं गांव के जल एकमात्र पीने योग्य पानी का स्रोत है, जो ग्रामीणों द्वारा पीने के लिए उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, यदि उनके कुएँ के पानी का उपयोग गाँव की पीने की आवश्यकता के रूप में किया जाता है। इसलिए उनके परिवार के लगभग तीन से चार सदस्य चार से छह महीने के लिए व्यवसाय के लिए मौसमी रूप से प्रवास करते हैं।

केसः ३, आयु– ६६–७० के करीब, स्त्री , गाँव– आमला, उनका परिवार लगभग तीस से ज्यादा सालो से मौसमी प्रवास कर रहा है। 10 साल पहले वह खुद भी मौसमी प्रवास करती थीं। उनके पांच संतान हैं जिसमें चार बेटे और एक बेटी हैं, सभी की शादी हो चुकी है। बेटी ससुराल में है। चार बेटों में सबसे बड़ा अलग रहता है। जबकि सबसे छोटे दो बेटे उनके साथ रहते हैं और वे – मौसमी रूप से प्रवास करते हैं। जब 10 से 12 बीघा का खेत था तब मूंगफली, ज्वार, मूँग, मोठ जैसी फसलें उगाई जाती थीं। देशी बाजरे की अधिकता थी। लेकिन जब बटवारा हुआ तो उसे 10 बीघा जमीन मिली। उनके चार बच्चे हैं, ढाई एकड़ जमीन, जिसमें सबका जीवन यापन करना मुश्किल है। भूजल भी क्षारीय हो गया है और अब तीनों मौसमों में खेती नहीं की जा सकती है। वहीं आसपास के इलाकों में भी रोजगार नहीं मिल रहा है इसलिए उन्हें मौसमी प्रवास करना पड़ रहा है।

ऊपर बताए गए मामले सामान्य स्थिति से जुड़े एकमात्र मामले नहीं हैं। किन्तु सौराष्ट्र के कई जिले एवं तहसीलों के तटीय समुदायों से बड़ी संख्या में हो रहे मौसमी प्रवास का प्रतिनिधित्व करता है। इन मामलों से पता चलता है कि बिगड़ती पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण भूमि और पानी समस्या का उदय हुआ है, और किसी तरह कृषि और उनके व्यवसाय पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। समग्र रूप से इस प्रक्रिया का मौसमी प्रवास अपरिहार्य हो गया है। वहीं दूसरी ओर बढ़ती आबादी ने रोजगार के मुद्दे भी उठाए हैं। यह पर्यावरणीय मुद्दों जैसे दूषित भूमि, दूषित पानी, तटीय वातावरण और बढ़ती आबादी के मौसमी प्रवास के कारण है। पीटरसन बताते हैं कि जब एक जुट अपने भौतिक वातावरण से जुड़ी ताकतों से अनुकूल होने के कारण असमर्थित हो जाता है, तो वह जुट अन्यत्र स्थानांतरित हो जाता है और सीमित जमींन पर जनसंख्या का दबाव होता है। जबकि उनके काम की अवधि और प्रवास के कारण उनके बच्चों की शिक्षा भी प्रभावित होती है। दूसरी ओर, परिवार खराब आर्थिक स्थितियों के कारण श्रम शक्ति में शामिल होते हैं, भले ही अध्ययन इकाइयों का शिक्षा स्तर बहुत कम हो और वे शायद ही कभी प्राथमिक स्तर से ऊपर भी पहुँच पाते हों। संरचनात्मक रूप से जिम्मेदार बनने का यह तरीका है। हालांकि, गिडेंस संरचनात्मक ताकतों की उपेक्षा नहीं करते हैं, लेकिन व्यक्ति अपने पास उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक को चुनता है।

गुजरात में सौराष्ट्र–कच्छ समुद्र तट के साथ लवणता क्षेत्र में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जिसमें 88,947 हेक्टेयर का अतिरिक्त प्रभावित क्षेत्र शामिल है। उच्च स्तरीय समिति द्वारा किए गए एक अध्ययन के आधार पर सीएजी की रिपोर्ट में कहा गया है कि लवणता की घटना ने गुजरात के तटीय क्षेत्र के 779 गांवों को प्रभावित किया

है।

जब कार्यस्थल की बात आती है, तो किसानों के स्वामित्व वाली भूमि के बडे बरामदे मे जीवन यापन किया जाता है। जहां किसानों द्वारा उन्हें पानी, बिजली आदि उपलब्ध कराई जाती है। खेत मजदूरों को इसकी कोई चिंता नहीं है। कपास की बुनाई लगभग सुबह से ही शुरू हो जाती है। घर में एक सदस्य घर का काम करने के लिए रहता है बाकी के सदस्य खेत में जाते है और फिर देर शाम तक काम किया करते है। बुनाई किए गए कपास के वजन पर दाम मिलते है इसलिए श्रम के प्रति अत्यधिक उत्साह रहता हैं। किसानों और मालिकों के संरक्षक के अंतर्गत वह रहते है। छोटी—बड़ी मुसीबतों में भी ये खेतिहर मजदूरों की मदद करते हैं। कुछ मामलों में,भिन्न सामाजिक समूहों की पृष्ठभूमि वाले किसानों के मालिकों और खेत मजदूरों के साथ 'परोपकारी संबंध' होते हैं। इस तरह यहां किसान और खेतिहर मजदूरों के संबंधों में अंतर किया जा सकता है। इस संबंध को इस स्थिति की "सामाजिक विशिष्टता" भी कहा जा सकता है। केस : ५ के मामले में उनके बड़े बेटे की शादी दो साल पहले हुई थी। इस साल भी जब वह मजूरी के लिए गया तो उसके किसान मालिक ने उसे उसकी तनख्वाह से भी ज्यादा दिया और कहा कि अगले साल काम पर आने पर वह पैसे ले लेगा। दूसरी ओर, जब पैसे की जरूरत होती है, तो पैसे को भी निकासी पर तौला जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में गरीबी और पर्यावरणीय संसाधनों के बीच संबंध

सौराष्ट्र क्षेत्र में ऐसे लोगों की संख्या जो अपने खेतों से गुजारा करने में असमर्थ हैं, हर साल बढ़ रही है। उनमें से अधिकांश के लिए, भूमि ही उनके पास एकमात्र संपत्ति है, लेकिन पूरे तटीय क्षेत्र में अचल संपत्ति की कीमतें भूजल प्रदूषण के कारण काफी गिर गई हैं। (एक बीघा हर राज्य के आकार में भिन्न होता है और 0.6 एकड़ जितना हो सकता है और 0.3 एकड़ जितना कम हो सकता है।) इन कम कीमतों पर भी, कुछ खरीदार हैं। आगा खान ग्रामीण सहायता कार्यक्रम (एकेआरएसपी) के साथ क्षेत्र में काम कर रहे एक जल विज्ञानी राजीव भागवत कहते हैं, ''ज्यादातर मामलों में, कोई भी जमीन खरीदने को तैयार नहीं है क्योंकि इसे एक मृत नुकसान माना जाता है।'' किसानों का मानना है कि जिन इलाकों में अब पीने योग्य पानी है, वहां भी पानी देर—सबेर खारा हो जाएगा। नतीजतन, कुछ अपने कृषि कार्यों का विस्तार करना चाहते हैं। लोग कृषि पर अपनी निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहे हैं। जबकि अमीर शहरी क्षेत्रों में व्यावसायिक गतिविधियों में निवेश करते हैं, छोटे किसान अपने परिवार के सदस्यों को मजदूरी के लिए बाहर भेज रहे हैं।''

लेकिन इतने बड़े संकट ने भी किसानों को पानी की किफायत करने के लिए प्रेरित नहीं किया है इसलिए, जबकि तटीय सौराष्ट्र के और अधिक गाँव पीने के पानी के संकट का सामना कर रहे हैं, फसल की पैदावार गिर रही है, बाग सिकुड़ रहे हैं और बड़ी संख्या में किसान मजदूरी करने वाले बन गए हैं, इसका कारण – भूजल का अत्यधिक दोहन – लगातार बढ़ रहा है। गरीबी पर्यावरण की कुछ ऐसी समस्याओं को जन्म देती है, जिनसे यह और बढ़ती है। उदाहरणार्थ, गरीब किसानों द्वारा कमजोर जमीन पर खेती करने से उसका क्षरण और बढ़ जाता है और अंततः इससे किसान की ही निर्धनता बढ़ती है। गरीबी और पर्यावरण परिस्थिति सीधे—सीधे आपस में जुड़े हुए हैं, विशेषकर वहाँ, जहाँ लोग अपनी रोजी—रोटी के लिये अपने निकट के प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। प्रस्तुत अभ्यास क्षेत्र मे मौसमी स्थानांतरण कर रहे किसान भी अपने जीवन गुजारा के लिए प्राकृतिक संसाधन पर निर्भर है।

वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों की बढ़ती मांग तथा प्रकृति के बारे में समझ की कमी के चलते यह संबंध प्रभावित हुआ है। पर्यावरणीय अवक्रमण विशेषकर निर्धन ग्रामीणों में गरीबी को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख कारक है। इस प्रकार का अवक्रमण मृदा की उपजाऊ शक्ति, स्वच्छ जल की मात्रा और गुणवत्ता, वायु गुणवत्ता, वनों, वन्य—जीवन तथा मत्स्य—पालन को प्रभावित करता है।

प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर जैव विविधता पर ग्रामीण निर्धनों निर्भरता स्वतः सिद्ध है। जैव विविधता पर लगातार बढ़ता दबाव मानव की बढ़ती जनसंख्या को भी परिलक्षित करता है। जब तक जनसंख्या स्थिर नहीं हो

जाती, तब तक यह दबाव कम नहीं होने वाला और यह भी उतना ही सत्य है कि गरीब परिवारों में सदस्यों की संख्या अधिक होती है।

स्थानांतरण करने वाले परिवारों की स्थिति संबंधी मुद्दों पर उनका अपना दृष्टिकोण

कुल १० प्रतिशत उत्तरदाताओं में से ८ प्रतिशत उत्तरदाता जिले के बाहर के क्षेत्रों में स्थानांतरण करते हैं जबकि 2 उत्तरदाता अपने जिले के क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। यह दोनों परिवारों का कहना है कि नजदीकी क्षेत्र मे काम करने से अपने समुदाय या गाँव के साथ जीवंत संपर्क रहता हैं, और छोटे और बड़े मौकों या अवसरो मे शामिल हो सकते हैं। पर जो दूर दराज के इलाको मे काम के लिए निकलते है वह आमतौर पर २० से ३० व्यक्तियों की टीमों के रूप में किया जाता है। इस समूह के सदस्य वह लोग है जो करीबी रिश्तेदार या पड़ोसी है। इस तरह वे समूहों में प्रवास करते हैं। इस तरह का प्रवास का मुख्य कारण सामाजिक सुरक्षा है। चूंकि २०, ३० से ३५ व्यक्ति (लगभग 5 से 6 परिवार) एक ही समय में प्रवास करते हैं, इसलिए किसी को जरूरत के समय मदद की जा सकती है। इस प्रकार, वे जिला क्षेत्र से बाहर जाते समय सुरक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं। इन १० उत्तरदाताओं में से ६ उत्तरदाताओं को अपने मूल स्थान या समुदाय के प्रति लालसा है। मनुष्य में अपने क्षेत्र को फिर से हरा–भरा बनाने की प्रबल इच्छा होती है। जबकि ३ उत्तरदाताओं ने इस मामले पर निराशावादी दृष्टिकोण भी जताया है। उनकी राय में, यह अब उनका भविष्य है। उसके इलाके में ऐसा कभी नहीं होने वाला है और उसकी जिंदगी ऐसे ही मजाक करने में बीत जाएगी। जब 1 प्रतिवादी ने यह राय व्यक्त की कि अब बरसात के मौसम में भी अपने वतन क्यों जाएं, जहां स्थायी काम मिलेगा वही गुजारा कर लेना चाहिए। अध्ययन के तहत सभी परिवारों ने यह कहा कि इस तरह से जीविकोपार्जन करने से निश्चित रूप से उनकी आय में वृद्धि हुई है, लेकिन उनका सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन सुखद नहीं हो सकता। जब वे बाहर होते हैं तब गांव में अकेले रहने वाले सदस्यों के बारे में चिंता रहती है और ये भी चिंता रहती हैं कि अगले साल जब वे गांव में होंगे तो उन्हें नौकरी मिलेगी या नहीं।

निष्कर्ष

इस प्रकार, मौसमी प्रवास एक पर्यावरणीय और जनसांख्यिकीय समस्या बनी हुई है। अकेले कानून इसका समाधान नहीं कर सकता। अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश अप्रवासी अशिक्षित या कम पढ़े–लिखे हैं जो किसी न किसी रूप में किसी के स्थानांतरण के लिए पर्यावरण विकर्षण का बर्बर कार्य कर रहे हैं। अब अगर हम प्रवासियों की विशेषताओं के संदर्भ में चर्चा करें, तो जो लोग प्रवास करते हैं वे मूल क्षेत्र के लोग हैं जो अधिक विविध क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है। दूसरी ओर, यह देखा गया है कि प्रवासी परिवारों में मूल स्थान और गंतव्य दोनों की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का मिश्रण होता है। मौसमी प्रवास के कुछ कार्यात्मक और कुछ विकार्यात्मक पहलू हैं। विधवाओं, परित्यक्त और निराश्रित परिवारों को भी समूह प्रवास में काम और सामाजिक सुरक्षा मिलती है जिसे इसका कार्यात्मक पहलू माना जाता है। संक्षेप में, मौसमी प्रवास तटीय ग्रामीण समुदायों में जीवन शैली का एक नया रूप बन रहा है और अब एक प्रकार की ढांचागत व्यवस्था या संरचना बन रहा है। दूसरी ओर, यह कहा जा सकता है कि तटीय अध्ययन के तहत गांवों की अर्थव्यवस्था 'मौसमी अर्थव्यवस्था' बन रही है और अब यहाँ पर उसे मौसमी गरीबी भी कहे तो भी अनुचित नहीं है इसलिए उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था और संबंधों को भी मौसमी अर्थव्यवस्था के अनुरूप समायोजित किया जाता है।

आज पर्यावरण संकट के दौर से गुजर रहा है, और यह मानव प्रयासों एवं प्रवृतियों का कारण है, और यह मानवीय सक्रियता और प्रवृतियाँ है जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं। इसी के वजह से ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि के बीच संबंध बदल रहा है। एक और जमीन के मालिक दूसरे क्षेत्र में मजदूर बन रहे हैं, इतना ही नहीं बल्कि उन्हें कमाई के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना पड़ता है, वे अपने मूल समाज और समुदाय से भी जुड़े होते हैं इसलिए वे मौसमी रूप से स्थानांतरण करते हैं। वहाँ परिवार चलाने के लिए उनके पास श्रम कार्य के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। वे अच्छी तरह से शिक्षित या कुशल श्रमिक नहीं हैं, इसलिए वे वहां की गतिविधियों से अच्छी आय प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। अब इस परिस्थिति से बाहर आना बेहद जरूरी है। मौसमी स्थानांतरण और

गरीबी के बीच वैज्ञानिक संबंध प्राप्त करने के लिए इस क्षेत्र का अध्ययन करने की कोशिश की है।

संदर्भ सूची

१. आयंगर सुदर्शन और शुक्ल निमीषा, *पर्यावरणीय अर्थशास्त्र: एक परिचय,* गुजरात विध्यापीठ, अहमदाबाद

२. ओजा गुणवंत एम, वस्ती और पर्यावरण, युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद,१९९२।(गुजराती)

३. चौधरी सुमनबेन, *पर्यावरण का समाजशास्त्र,* युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माणबोर्ड, अहमदाबाद,२०००।(गुजराती)

४. पटेल जे. सी., *समाज अने पर्यावरण,* पाश्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद।

५. लाल मदन, *पर्यावरण विधि,* विधि साहित्य प्रकाशन, विधायी विभाग, विधि और न्याय मंत्रालय, भारत सरकार, २०२१।

६. चावडा एच. एल., *पर्यावरण और समाज,* पेरेडाइज पब्लिकेशन, जयपुर।

७. Gujarat Ecology Commission, 2001, Coastal and MaritimeEnvironments of Gujarat: Ecologyand Economics, State of theEnvironment Gujarat.

****